भजन

तर्ज–उनसे मिली नजर के मेरे होश

निसवत से मिल गए मेरे जागनी रत्न
आत्म तड़प उठे सुन कर जागनी वचन

1 पिया मेहर उन पर जो हुई, अन्दर बैठे श्री युगल धनी
वाणी से जोड़ा रूह को, याद दिलाई निजघर की
मुझपे करी मेहर..2, कि मिले पिया जी चरन

2 प्यारे मेरे सरकार श्री, मस्ती पिलाई आत्म की
इश्क है क्या पहचान है दी, इश्क ही मेरे धाम धनी
अभियान जागनी..2, के फिर ईक पे ईक लगे

3 पिया मेहर से वाणी का, टीका सुन्दर सरल किया
त्रैगुण ष्ण के बंधन तोड़, श्री प्राणनाथ जाहिर है किया
निजबुद्ध से है दिया..2, रूह को धाम चितवन

4 प्रेम सेवा रूह की रहनी, सिखाई मेरे सरकार श्री
गादी पूजा छुड़ा करके, राह दिखाई श्री जी की
सीधे ही चल पड़ो..2, तो उठेंगे निज वतन